

ब्रह्मदातृ nom. ag. = ब्रह्म M. 2, 146.

ब्रह्मदान (ब्रह्मन् + दान) n. das Mittheilen des heiligen Wissens M. 4, 233.

ब्रह्मदारु (ब्रह्मन् + दारु) n. der indische Maulbeerbaum AK. 2, 4, 22. loc. °दारौ (also m.) TRIK. 3, 3, 394.

ब्रह्मदास (ब्रह्मन् + दास) m. N. pr. eines Mannes Verz. d. Oxf. H. 333, b, No. 786. eines Fürsten am Anfange des 13ten Jahrh. 347, a, N.

ब्रह्मदेय (ब्रह्मन् + देय) adj. nach der bei Brahmanen üblichen oder nach Brahman's Weise (ब्राह्मेण विवाहेन; vgl. M. 3, 27) gegeben werdend (zur Ehe): यो ब्रह्मदेयो तु ददाति कन्याम् wer eine Tochter nach Brahman's Weise verheirathet MBh. 3, 12729 (= 13, 2957). 13, 2950 (u. देय 1, u. nicht genau übersetzt). ब्रह्मदेयात्मसंतान der Sohn einer nach Br. Weise verheiratheten Mutter M. 3, 185. Statt dessen ब्रह्मदेयानुसंतान MBh. 13, 4296. ब्रह्म वेदः परविद्या वा तदेव देयं येनां तेषामनुसंतानः परंपर्यामुत्पन्नः स्वयं च ब्रह्मविद्व्यापको वा ब्रह्मवेदानुसंतानः Schol. ताः कन्याः प्रददौ दत्तः स्वयं प्राचेतसः प्रभुः । ब्रह्मदेयेन विधिना ब्रह्मप्राप्तेन nach Brahman's Heirathsweise HARIV. 11836. Statt ब्रह्मदेया MBh. 3, 12729 ed. Bomb. und bei KULL. zu M. 3, 185 ब्राह्मदेया, welche Form wohl die richtigere ist.

ब्रह्मदैत्य (ब्रह्मन् + दैत्य) n. ein in ein Gespenst verwandelter Brahmane CKDa. (इत्यैतिकम्).

ब्रह्मद्वार (ब्रह्मन् + द्वार) n. der Eingang zum Brahman (n.) MAITRJUP. 4, 1. 6, 28.

ब्रह्मद्विष्य (ब्रह्मन् + द्विष्य) adj. feindlich gegen Andacht und heiliges Werk, Religionshasser, gottlos (von Menschen und Dämonen) RV. 2, 23, 4. ब्रह्मद्विषे तपुषि कृतिर्मस्य 3, 30, 17. ब्रह्मद्विषः सूर्याद्यावयस्व 5, 42, 9. 6, 32, 2. 3, 7, 104, 2. 8, 43, 23. 33, 1. 10, 36, 9. अर्हं रुद्राय धनुरा तनोमि ब्रह्मद्विषे शरैश्च कृत्वा उं 10, 123, 6. 160, 4. 182, 3. M. 3, 154 (Brahmanen-hasser nach KULL.). ब्रह्मधर्मद्विष 41. — Vgl. ब्रह्मविद्विष.

ब्रह्मधर (ब्रह्मन् + धर) adj. sich im Besitz des heiligen Wissens befindend MBh. 13, 3026.

ब्रह्मधातु (ब्रह्मन् + धातु) m. ein Grundbestandtheil Brahman's: सूर्यो मही जलं वह्निर्वायुराकाश एव च । दीनितो ब्राह्मणश्चन्द्र इत्येते ब्रह्मधातवः (in denen sich Rudra manifestirt) || Verz. d. Oxf. H. 33, 4, 13. fg.

ब्रह्मधन (ब्रह्मन् + धन) m. N. pr. eines Buddha Lot. de la b. l. 113. 1. ब्रह्मन् (von 2. वरुण) n. UNĀDIS. 4, 145. 1) die als Drang und Fülle des Gemüths auftretende und den Göttern zustrebende Andacht, überh. jede fromme Aeusserung beim Gottesdienst: सोम. ब्र० यावन् यज्ञ RV. 7, 33, 7. स्तोम, ब्र० 72, 3. 4, 22, 1. 6, 23, 1. 5. गिरः, ब्र० 3, 34, 6. 6, 38, 3. 4. उप ब्रह्माणि शृणुते गिरौ मे 69, 4. 7, 83, 4. प्र ब्रह्मं गायत 8, 32, 27. ब्रह्माणा वन्दमानः 3, 18, 3. इमा ब्रह्माणि जग्निता वै अर्चन् 1, 163, 14. तान्वं दूना ब्रह्मणा वेदयामसि 4, 36, 7. मम ब्रह्मेन्द्र याज्ञच्छा 2, 18, 7. इमा ब्रह्मा सधमार्दे गुणस्व 7, 22, 3. ये च पूर्व ऋषयो ये च नूना इन्द्र ब्रह्माणि जनयन्त विप्राः 9. ऋषीणाम् 28, 3. 70, 5. विश्वामित्रस्य रतन्ति ब्रह्मे भार्ते जनम् 3, 33, 12. ब्रह्माकर्म भगवा न रयम् 4, 16, 20. 6, 32, 2. 7, 33, 14. 37, 4. प्र सभाते ब्रह्मे च भर्तारं ब्रह्मं प्रियं वरुणाय 5, 83, 1. नव्य 6, 17, 13. 30, 6. पूर्व्य 10, 13, 1. परिवत्सरीण 7, 103, 8. मरुद्वह्निं वदप्यति AV. 1, 32, 1. 12, 1, 1. ब्र० कर्मन् पुरोधो 5, 24, 1. VS. 4, 11. पुनश्चिं वा ब्रह्मणा देव्येन कृत्वा यस्मै वैष्णवे TS. 1, 6, 2, 1. Brhaspati ist ब्रह्मणो देवकृतस्य राज्ञो RV. 7, 97, 3. ज्येष्ठराज् und जनिता ब्रह्मणाम् 2, 23, 1. 2. Soma ब्रह्मणो गोपाः

6, 82, 3. — 2) heiliger Spruch, namentlich so v. a. Zauberspruch; = मन्त्र Cit. beim Schol. zu PRAB. 23, Cl. 12. RV. 1, 162, 17. ब्रह्मपतिर्भिन्-
द्वह्मणा वलम् 2, 24, 3. अनागतं ब्रह्मणा वा कृणोमि AV. 2, 10, 1. 1, 23, 4. 3, 6, 8. निणोमि ब्रह्मणामित्रान् VS. 11, 82. तमितो नशयामसि ब्रह्मणा वीर्यावता 4, 37, 11. यत्रेदं ब्रह्मं क्रियते परिधिर्विनाय कम् 8, 2, 25. गात्राणि ते ब्रह्मणा कल्पयामि 18, 4, 32. des Asita, Kaçjapa 1, 14, 4. des Agastja 2, 32, 3. ब्रह्मणा नाष्ट्रा रक्षांसि कृत्ति ÇAT. Br. 5, 2, 4, 18. ब्रह्मणा पञ्चमानस्य पञ्चन्यारिददाति 1, 7, 1, 8. 2, 6, 4, 5. 4, 3, 2, 4. 10. (आ मौञ्जी-
बन्धनात्) नामिव्याहारयेद्ब्रह्म स्वधानिनयनादते M. 2, 172. Solche Sprüche bilden eine besondere Gattung neben ऋचः, सामानि, यजूषि AV. 15, 6, 3. 3, 7, 11, 8, 23. Daher die Benennung Brahmadeva (s. d. W.) für die Sammlung, welche gewöhnlich Atharvaveda heisst. Nach einem Cit. beim Schol. zu PRAB. a. O. auch = श्रौकारः vgl. एकातरं परं ब्रह्म M. 2, 83. श्रौकारः प्रणवो ब्रह्म सर्वमन्त्रेषु नायकः VP. 1, N. 1. — 3) heiliges Wort, Gotteswort, neben वाच् dem profanen AIT. Br. 3, 31. 3, 15. ब्रह्मं गन्धर्वा अर्चन्नापन्वेवाः TS. 6, 1, 6, 6. KATH. 24, 1. अथ ब्रह्मं वदन्ति परिमितं वा ऋचः परिमितानि सामानि परिमितानि यज्ञैर्यथैतस्यैवातो नास्ति यद्ब्रह्म TS. 7, 3, 1, 4. तस्यास्त ऋषयः सप्त तीरे वागष्टमी ब्रह्मणा संविदाना ÇAT. Br. 14, 5, 2, 4. 5. 1, 3, 4, 6. 2, 1, 4, 10. साष्टातरा गायत्री ब्रह्म 8, 3, 2, 7. एतद्देवाणां परमं गुह्यं ब्रह्म यच्चतुर्केतारः TBR. 2, 2, 4, 4. heiliger Text: तत्र ब्रह्मेतिहासमिग्रम् NIR. 4, 6. = वेद AK. 3, 4, 18, 147. H. an. 2, 276. MED. n. 96. HALĀJ. 3, 82. Cit. beim Schol. zu PRAB. 23, Cl. 12. ब्रह्मणश्चैव धारणात् M. 1, 93. 2, 116. 144. ब्रह्मणो ग्रहणम् 173. ब्रह्माधीत्य 4, 99. ब्रह्म (= ब्राह्मणम् KULL.) कन्दस्कृतं (= मन्त्रज्ञातम्) चैव 100. अर्हं न कीर्तयेद्ब्रह्म 110. 111. ब्रह्मैवाभ्यसते 149. 11, 84. 97. रक्षस्यं ब्रह्मसंमितम् SĪRJAS. 14, 27. MĀRK. P. 112, 10. ब्रह्मणि so v. a. वेदे VOP. 26, 220. — 4) heilige Weisheit, Theologie, Theosophie; die theoretische Seite neben तपस् der practischen; von den Comm. öfters erläutert als ब्रह्म त्रयीत्रयम् AV. 10, 10, 33. ब्रह्मं च तपश्च सप्तऋषय उप जीवन्ति 8, 10, 25. ब्रह्मणा तपसा अमेणा 6, 133, 3. 15, 1, 3. तौ रतन्ति तपसा ब्रह्मचारी तत्केवलं कृणते ब्रह्मं विद्वान् 11, 3, 10. AIT. Br. 3, 6. (प्रज्ञापतिः) ब्रह्मैव प्रथममज्ञत त्रयीमेव विद्याम् ÇAT. Br. 6, 6, 1, 8. 10. अग्निवापुरविभ्यस्तु त्रयं ब्रह्म सनातनम् । उदेहं यज्ञसिद्धयर्मयगुःसामलक्षणम् || M. 1, 23. ब्रह्मतेजोयोगात् R. 1, 60, 20. ततो ब्रह्मं च वेदाश्च सत्यं च वरयन्त माम् R. GORR. 1, 67, 13. अस्मोह इति प्राङ्ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः 15. = ज्ञान H. an. Cit. beim Schol. zu PRAB. 23, Cl. 12. — 5) heiliges Leben, insbes. Keuschheit (vgl. ब्रह्मचर्य)ः भगवान्काश्यपः शाश्वते ब्रह्मणि स्थित वर्तते v. l.) इति प्रकाशम् । इयं च वः सखी तदात्मजेति कथमेतत् ÇĀK. 14, 12. fg. अहिंसामृतान्तेष्वब्रह्माकिंचनता यमाः H. 81. = तपस् Kasteiung AK. H. an. MED. — 6) das Brahman, der höchste Gegenstand der Theosophie, der unpersönlich gedachte Gott, das Absolutum. Zur Unterscheidung von den übrigen Bedeutungen mit den Beisätzen: ज्येष्ठ AV. 11, 3, 5. 23. यत्र देवा ब्रह्मविदो ब्रह्म ज्येष्ठमुपासते 10, 7, 24. ÇAT. Br. 10, 3, 5, 10. प्रथमज 6, 1, 4, 10. 8, 6, 1, 5. स्वयंभु 10, 6, 5, 9. 13, 7, 1, 1. 14, 3, 5, 22. TAITT. Aa. 2, 9, 1. 10, 13. परं M. 2, 82. fg. 6, 85. हे ब्रह्मणो वेदितव्यो शब्दब्रह्म परं च यत् । शब्दब्रह्मणि निज्ञातः परं ब्रह्माधिगच्छति MAITRJUP. 6, 22 = MBh. 12, 8340. fg. हे वाव ब्रह्मणो रूपे मूर्ते चामूर्ते चाद्य यन्मूर्तं तदसत्यं यदमूर्तं तत्सत्यं यद्ब्रह्म (so ist zu lesen) तद्व्याप्तिः MAITRJUP. 6, 3. वासुदेवः परं ब्रह्म SĪRJAS. 12, 12. ब्रह्माभ्येति परं पदम् M. 12, 126. प-